गीत

लहर का सन्देश

—डॉ० रवीन्द्रनाथ मिश्र

तुम लेश मात्र आघातों से ही
चूर-चूर हो जाते हो।
क्षण भंगुर सुख की मदिरा में
अपना सर्वस्व लुटाते हो।

मैं बार-बार चट्टानों से
लोहा लेकर मुड़ जाती हूँ।
संकल्प और विश्वास लिए
आगे ही बढ़ती जाती हूँ।

हे मानव तुम सीखो मुझसे
जीवन का पाठ पढ़ाती हूँ।
झंझावातों में अडिग रहो
सन्देश आज बतलाती हूँ।

हिन्दी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय
गोवा—403203

***